

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद-३, बुधवार, ता. १३-८-१९८०
पयनामृत-४७, प०, ६२, ७५. प्रपयन नं. ६

त्रैकालिक ध्रुव द्रव्य कभी बंधा नहीं है. मुक्त है या बंधा है वह व्यवहारनयसे है, वह पर्याय है. जैसे मकड़ी अपनी लारमें बंधी है वह छूटना चाहे तो छूट सकती है, जैसे घरमें रहनेवाला मनुष्य अनेक कार्योंमें, उपाधियोंमें, जंजालमें इंसा है परंतु मनुष्यरूपसे छूटा है; वैसे ही जब विभावके जालमें बंधा है, इंसा है, परंतु प्रयत्न करे तो स्वयं मुक्त ही है. चैतन्य तो ज्ञान-आनंदकी मूर्ति-ज्ञायकमूर्ति है, परंतु स्वयं अपनेको भूल गया है. विभावका जाल बिछा है उसमें इंसा गया है, परंतु प्रयत्न करे तो मुक्त ही है. द्रव्य बंधा नहीं है. ४७.

पयनामृत, ४७वां बोल. 'त्रैकालिक ध्रुव द्रव्य कभी बंधा नहीं है.' आलाला..! अंतर जो वस्तु है, त्रिकाली द्रव्य पदार्थ कभी बंधा नहीं है. यदि द्रव्य बंध जाय तो द्रव्यका अभाव हो जाय. आलाला..! वस्तु यदि बंधमें आ जाये, पर्यायमें बंधमें आये तो पर्याय भविन होती है, रूप ही बटल जाय, वैसे यदि द्रव्यका अभाव हो जाय. आलाला..! मुक्त न रहे तो वस्तुका नाश हो जाय. पंडितज! थोड़ी सूक्ष्म बात है, प्रभु! त्रिकाली ध्रुव तीनों काल रहनेवाली महासत्ता, चैतन्य स्वभाववाली सत्ता द्रव्य कभी बंधा नहीं है.

'मुक्त है...' आलाला..! यह बात बैठनी... रागसे भी भिन्न और पर्यायसे लक्ष्यमें लेना. दया, दानका राग बंधनका कारण (है). निर्मल पर्यायसे वस्तुको लक्ष्यमें लेना वह अपूर्व पुरुषार्थ है. वह पुरुषार्थ कभी किया नहीं और वस्तुकी प्राप्ति दुर्घ नहीं. मान लिया सुनकर-पढकर कि अपने मानते हैं और ऐसा है. अंतर अनुभवमें आना चाहिये वह अनुभवमें नहीं आया. वह यहां कहते हैं कि 'मुक्त है या बंधा है वह व्यवहारनयसे है,...' बंध और मुक्त दो पर्याय, वह तो व्यवहारनयका विषय है. त्रिकाली मुक्त है वह निश्चयका विषय है. त्रिकाली मुक्त है वह निश्चयका विषय है और बंध-पर्यायमें बंध एवं मुक्त है, दोनों व्यवहारनयका विषय है. आलाला..! व्यवहारनयका विषय है तो छूट सकता है. निश्चयके अवलंबनसे वह छूट सकता है. थोड़ी सूक्ष्म बात है, भाई! भाषा तो आ जाय, लेकिन अंतर भावमें उतारना

अलौकिक बात है. अनंत कालसे अनंता-अनंता पुद्गल परावर्तन मलाविटेलमें किये. वहां भगवानकी मौजूदगी, हमेशा मौजूदगी (रहती है). वहां भी अनंत भव करके अनंत परावर्तन किये. समवसरणमें अनंत बार गया, अनंत बार सुना. लेकिन जो चालिये, मुक्तस्वरूप है उस ओर उसकी दृष्टि गई नहीं. आला..! उस ओर उसकी दृष्टि गई नहीं. आला..!

‘मुक्त है या बंधा है वह व्यवहारनयसे है,...’ आला..! वह तो दोनों पर्याय है. बंधन और मुक्त तो पर्याय है. पर्याय तो व्यवहारनयका विषय है. आला..! त्रिकावी चीज जो ध्रुव है वह उपादेय चीज है. अंगीकार करने लायक, स्वीकार करने लायक वह एक ही चीज ध्रुव है. व्यवहारनयसे वह पर्याय है, बंध और मोक्ष. ‘जैसे मकड़ी अपनी वारमें बंधी है...’ अपनी वारमें बंधी है. अपने मुंडमेंसे वार निकालकर बंधती है. आला..! ‘वह छूटना चाहे तो छूट सकती है,...’ मकड़ी छूटना चाहे तो छूट सकती है. क्योंकि अपनी वार निकालकर बंधी है.

‘जैसे घरमें रहनेवाला मनुष्य अनेक कार्योंमें, उपाधियोंमें, जंजलमें इंसा है परंतु मनुष्यरूपसे छूटा है;...’ मनुष्यरूपसे तो नित्य है. चाहे जो भी उपाधिमें जाये, मनुष्य मिटकर पशु हो जाता है, ऐसा नहीं है. आला..! अनेक प्रकारके काम करने पर भी मनुष्यपना पलटकर उस काममें प्रवेश नहीं करता. और वह काम आत्मामें प्रवेश नहीं करता. त्रिकावी मुक्तस्वरूपमें व्यवहार रत्नत्रयका रागका भी अंदर प्रवेश नहीं है. आला..! सीधा ध्रुव स्वरूप है, उसे सीधा पकड़नेमें आये तो वह पकड़ सकता है. बाकी कोई किया की, यह किया, वह किया, धतना जानपना करनेके बाद पकड़े, वह सब बात है. आला..!

‘मनुष्यरूपसे छूटा है;...’ क्या कहते हैं? जैसे मकड़ी अपनी वारमें बंधी होने पर भी वारसे छूटना चाहे तो छूट सकती है. अपनी स्वतंत्रता है. जैसे मनुष्य चाहे कोई भी उपाधिमें हो, लेकिन मनुष्यपना नहीं जाता. और वास्वतमें तो मनुष्य उसे कहते हैं, गोम्मटसारमें कहते हैं, ज्ञायते धति मनुष्य. जो यह आत्मा भगवान है उसे जाने वह मनुष्य है. आला..! बाकी मनुष्यस्वरूपे मृगा चरंति. अष्टपालुडमें वहां तक कला है, अष्टपालुडमें. जिसको अंदर आत्मा क्या चीज है, उसकी अंदर दृष्टि और ज्ञान नहीं है, वह चलता मुर्दा है. आला..! अष्टपालुडमें है. चलता मुर्दा, मुर्दा है. अंतर चैतन्यज्योत अनंत गुणका भंडार पूरा भरा हुआ, उसकी तो नजर नहीं है, उसका वेदन नहीं है, उसका अनुभव नहीं है. उस ओरका लक्ष्य हो तो अतीन्द्रिय आनंदका वेदन आये. अतीन्द्रिय आनंदका वेदन जबतक

नहीं आता है, तबतक अंदर नहीं गया है. बाहर धूमता रहता है. आला..! समझमें आता है? अतीन्द्रिय आनंदस्वरूप भगवान् आत्मा, अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद जबतक नहीं आता है, तबतक वह बाहरमें लटकता है. आला..! कठिन बात है.

मनुष्य को भी काम करे, लेकिन मनुष्यपना यवा नहीं जाता. वैसे आत्मा ध्रुव, पर्यायमें जितना भी हो, निगोदपर्याय हो, या नौवीं त्रैवेयकमें जलनेवाला द्विगंबर मिथ्यादृष्टि साधु हो, वस्तु तो वस्तु है. वस्तुमें कोई झेझर होता नहीं. उसमें कभी झेझर होता ही नहीं. आला..! अंतरमें बैठना (चाहिये). मार्ग तो आसान है. अंतर वस्तु गहराईमें प्रभु, पर्यायके पातालमें, जो निर्मल पर्यायमें उसके अंदर पातालमें पूरा द्रव्य भरा है. उसकी मुक्त दशा है. मुक्त है तो मुक्त हो सकता है. आला..! जो मुक्त है उससे अंदरसे कबूल करे, अंदरसे, तो मुक्त हो सकता है. है, प्राप्ति प्राप्ति है. जो है वह मिलता है, नहीं हो वह मिलता है, ऐसा तो है नहीं. आला..!

‘वैसे ही जव...’ मनुष्यका दृष्टांत दिया न? मनुष्य कितने भी काम करे, फिर भी मनुष्य ही कलनेमें आता है. मनुष्य पलटकर पशु नहीं हो जाता. ‘वैसे ही जव विभावके जलमें बंधा है,...’ आला..! सूक्ष्म विकल्प. वहां तक बात ली है, १४२ गाथा-समयसार. मैं ज्ञायक हूं, मैं अबद्ध हूं. १४-१५ गाथा. अबद्धस्पृष्ट हूं ऐसा विकल्प है. आला..! उस विकल्पसे आत्मा मिलता नहीं. आला..! १४-१५ गाथामें अबद्धस्पृष्ट, अबद्धस्पृष्ट (आता है). मुक्त है और परके साथ स्पर्शित नहीं हुआ. ‘वैसे ही जव विभावके जलमें बंधा है, इंसा है परंतु प्रयत्न करे तो स्वयं मुक्त ही है...’ आला..! यह प्रयत्न को भी बाहरकी बातमें नहीं है. बाहरका जनपना हो उससे काम नहीं होता. अंतर वस्तुसे काम होता है. आला..! अंतरमें स्वयं मुक्त ही है. ‘ऐसा ज्ञात होता है.’ ऐसा अंतरमें पहले भान होता है.

‘चैतन्यपदार्थ तो मुक्त ही है.’ चैतन्य तो ज्ञान, आनंदकी मूर्ति (है). आला..! चैतन्यप्रभु ज्ञान और आनंदकी मूर्ति है. मूर्ति अर्थात् ज्ञान और आनंदस्वरूप है. ज्ञान त्रिकावी आनंद, त्रिकावी उस स्वरूप ही है. आला..! ‘परंतु स्वयं अपनेको भूल गया है.’ ऐसी खीज है. प्रत्येक (जव) भगवान् आत्मा है अंदरमें.

समयसारमें उटवीं गाथामें तो वहां तक कहा, अरे.. प्राणिओं! सब आ जाओ, लोकालोकके ज्ञानमें आ जाओ अंदर. उटवीं गाथामें कहा है. आला..! सामूलिक निमंत्रण (दिया है). पूरी दुनिया आ जाओ. ओलो..! भगवान् आत्मा ज्ञानस्वरूप है, पूरी दुनिया उसमें जननेमें आ जाओ. और वह जननेवाला मुक्त रहो. आला..!

कोई भवि-अभवि ऐसा भेद भी नहीं किया. सब लोक आ जाओ. अपनी दृष्टिसे सबकी बात की है. सब प्राणी अपने ज्ञानमें लोकालोक ज्ञानेनेमें अंदरमें आ जाओ. आलाहा..! ऐसी अंदर चीज भरी है. पूरी भरी है. आहा..!

‘विभावका जब बिछा है उसमें इंस गया है,...’ विभावके बहुत प्रकार है. सूक्ष्म विभाव अंदरमें वास्तविक तत्त्व जो है वह अंदर ज्वालमें न आवे तो अंदर कुछ भी सूक्ष्म शक्य ज्वालमें आता नहीं. उपयोगमें ज्वालमें आता नहीं. वह उपयोग .. है. क्या कदा? जो सूक्ष्म उपयोगसे आत्मा ज्वालमें आना चाहिये, वह आता नहीं. उपयोग सूक्ष्म नहीं है, स्वरूप ऐसा है. आलाहा..! समझमें आया? आलाहा..! बलिन कहेगी, बलिनके शब्दोंमें बहुत जगल... उनको शरीरमें ठीक नहीं. बलन तो जो है वह है. स्त्रीका देह आ गया है. बाकी उनकी दशा कोई अलग जति है. दुनियाको बाहरसे मालूम पडे नहीं. दुनिया तो बाहरका जनपना और बाह्य त्यागसे देजे, ठसलिये उसे किमत करनी नहीं आती. आलाहा..!

‘विभावका जब बिछा है उसमें इंस गया है, परंतु प्रयत्न करे...’ आलाहा..! ‘तो मुक्त ही है.’ प्रयत्न करे अंदरमें. कोई दूसरा उपाय नहीं है, प्रभु! अंदर स्वरूपमें प्रयत्न (करना) वही उसका उपाय है. जैसे रागमें प्रयत्न अनादिसे (करता है), रागका वेदन और करना, कर्ता छोकर करके वेदन करना. भवे शुभभाव हो, वह भी जहर है. उसका कर्ता छोकर वेदन करना वह अनादिसे यवा आ रहा है. मुक्त स्वरूप है न भगवान, तो उसमें जा. मुक्त ही है. प्रयत्न कर. ‘द्रव्य बंधा नहीं है.’ द्रव्य कभी बंधा नहीं है. आलाहा..! वस्तु है, सत्ता है, मौजूदगी चीज है, महासत्तावान है, महा जिसका अस्तित्व है. आलाहा..! वह वस्तु कहां जाये? वह वस्तु बंधती भी नहीं. आहा..! उसका अस्तित्व-मौजूदगी बंधा ही नहीं. मुक्तस्वरूप ही भगवान है. आलाहा..! ऐसा अंदर दृष्टिमें आना और अनुभव करना, वह कोई अलौकिक बात है. आलाहा..! बाहरमें पंडिताईमें वह भवे ही न आये. लेकिन वस्तु स्वयं अंदर प्राप्त कर ले. दुनियामें बाहरकी गिनतीमें नहीं आये. आहा..! ऐसी चीज है. ४७ हुआ न. किसीने लिखा है. ५०. ४७ के बाद ५० है.

तू सत्की गहरी जिज्ञासा कर जिससे तेरा प्रयत्न बराबर चलेगा; तेरी मति सरल एवं सुलटी होकर आत्मामें परिणामित हो जायगी. सत्के संस्कार गहरे डाले होंगे तो अंतमें अन्य गतिमें ली सत् प्रगट होगा. इसलिये सत्के गहरे संस्कार डाल. ५०.

‘तू सत्की गहरी जिज्ञासा कर...’ आलाहा..! है? तू सत्की गहरी-गहरी जिज्ञासा कर. परमात्मा पर्यायिके पीछे विराजता है. आलाहा..! पर्यायिके तलमें विराजता है. पर्यायि है उसके तलमें विराजता है. आलाहा..! सत्की गहरी जिज्ञासा-गहरी जिज्ञासा, तीव्र जिज्ञासा कर, ऐसा कहते हैं. गहरी अर्थात् तीव्र. आलाहा..! उसके बिना चैन पडे नहीं. आत्मानुभव बिना चैन नहीं पडे ऐसी गहरी जिज्ञासा कर. ‘जिससे तेरा प्रयत्न बराबर चलेगा.’ आलाहा..! अंतरमें तो प्रयत्न तो तब चलेगा कि जैसी वह चीज है, उस ओर यथार्थ ज्ञान करके जुक जाना, तब उसका अनुभव होता है. तबतक अनुभव होता नहीं.

अनुभव रत्न चिंतामणि, अनुभव है रसकूप,

अनुभव मार्ग मोक्षनो, अनुभव मोक्षस्वरूप.

क्योंकि वस्तु मुक्तस्वरूप है. उसका अनुभव हुआ तो यहां कदा कि वह तो मोक्षस्वरूप ही हो गया. वस्तु मुक्तस्वरूप थी ऐसी प्रतीत, अनुभवमें-वेदनमें आ गयी. वेदनमें आ गयी, उसका सवाल है. आलाहा..! वेदनमें न आवे तबतक उसने स्पर्श नहीं किया, आत्माको उसने स्पर्श नहीं किया. आलाहा..!

‘प्रयत्न बराबर चलेगा. तेरी मति सरल एवं सुलटी होकर...’ मति जो बाहरकी ओर जुकती है, वह अंतरमें जुके. और सरल, मति सरल एवं सुलटी. वक्तता तोडकर सरल हो जाय और सुलटी दशा हो जाय. ऐसी ‘सुलटी होकर आत्मामें परिणामित हो जायेगी.’ आत्मामें परिणामित हो जाय. आलाहा..! आत्मा जो परमपारिणामिक स्वभाव, परमपारिणामिक भावस्वरूप स्वभाव तुझे यहां मिलेगा. आलाहा..! वह परिणामित हो जायेगी. पर्यायमें परमपारिणामिकभावकी अनुभवमें पर्याय होगी. आलाहा..! सूक्ष्म बात है.

बलनोंमें बोले होंगे, अनुभवमेंसे यह सब आया है. आत्माका आनंदका अनुभव, उसमेंसे यह वाणी निकली है. साधारण मनुष्यको लगे, वही आता है, ऐसा लगे. लेकिन उसमें अंतर है. कहां-कहां ईर्क है, वह अंदर

‘सतूके संस्कार गलरे डाले लोंगे...’ सतूके संस्कार, जैसे संस्कार डालना कि कभी पलट नहीं जावे. कदाचित् इस भवमें समकित प्राप्त न हो तो दूसरे भवमें (प्राप्त हो जाय), जैसे सतूके संस्कार डालना. मैं अण्ड हूं, मुक्त हूं, अभेद हूं, ज्ञायक हूं, परम स्वभाविक पारिणामिक स्वभाव हूं. ऐसा संस्कार यथार्थमें, यथार्थमें (डालना). संस्कार तो डालता है, लेकिन यथार्थ नहीं हो तो उलटा हो जाय. यथार्थ संस्कार अंदर डाले... आलाला..! ‘तो अंतमें अन्य गतिमें ली...’ कदाचित् इस भवमें प्राप्त न करे और इसके संस्कार अंदरमें डाले... आलाला..! तो सत् प्रगट होगा. ‘अन्य गतिमें ली सत् प्रगट होगा.’ आलाला..! सातवीं नईके नारकीको अंदर प्रवेश करते समय मिथ्यात्व है. नईमें जाते समय मिथ्यात्व है. बादमें समकित प्राप्त करता है. सातवीं नईका नारकी. वेदनाका पार नहीं, भाई! उसके अक क्षणके दुःख परमात्मा कलते हैं, कोड भव और कोड जलसे कल सके नहीं. जैसे दुःखमें प्राणी समकित प्राप्त करता है. यहां लोग कलते हैं कि, हमे कुछ अनुकूलता हो तो हम निवृत्ति वे. व्यापार आदि पुत्र बराबर चलाये तो हम निवृत्ति वे. उसको दुःखका पार नहीं है, भापू! शरीरमें ज्वाला उके, शीत व्याधि है न? शीत व्याधि. पहली नईमें उषण है. अंतिम नईमें शीत है. बहुत शीत. शीतका अक कण यहां आये तो आसपासके लज्जों लोग मर जाय. आलाला..! ऐसी शीतमें तैंतीस सागर निकावे. अक तैंतीस सागर नहीं, जैसे तैंतीस सागर निकावे, भाई! विचार ली कहां करता है कि मैं कौन हूं? और मुझे क्या करना है? आलाला..!

अनंत बार तैंतीस सागरकी स्थिति आत्माके भान बिना गया. प्रभु! उस दुःखकी व्याख्या भगवान करते हैं. उसके दुःखको देखकर, यहां तो कौन देखनेवाला है, लेकिन उतना दुःख है कि उसके दुःख देखकर दूसरेको आंभमेंसे आंसु आये. एतना दुःख. एतने दुःखमें समकित प्राप्त करता है. ऐसा नहीं है कि एतना दुःख है तो निवृत्ति चाहिये, यह चाहिये और इलाना चाहिये. आलाला..! जैसे असंख्य समकित्ती सातवीं नईमें हैं. आलाला..! अर्थात् प्रतिकूल संयोग पर नजर मत कर. अनुकूल संयोग पर नजर मत कर. दोनों चीज ज्ञेय है. अनुकूल-प्रतिकूलताकी कोई छाप अंदर नहीं मारी है. ज्ञेय वस्तु है. अक आत्माके सिवा सब ज्ञेय है. ज्ञेयके दो भाग नहीं है कि यह ज्ञेय ठीक है और यह ठीक नहीं है. आलाला..! ज्ञानमें सब ज्ञेय ज्ञानने लायक है. वह ली व्यवहार है. ज्ञान परको ज्ञाने वह ली व्यवहार है. बाकी निश्चयसे तो स्वयंको ज्ञानता है. आलाला..! ऐसी चीज है. जैसे अनंत ज्ञाने प्राप्त कर लिया. अनंत सिद्ध हो गये हैं. नहीं हो सके ऐसा नहीं है. अनंत हो गये हैं,

ईसलिये अनंतके साथ तू आ जा, प्रभु! आलाला..! तेरी शक्ति अनंत मला है.

‘सतके संस्कार गहरे डाले होंगे तो अंतमें अन्य गतिमें भी सत् प्रगट होगा. ईसलिये सतके गहरे संस्कार डाल.’ आलाला..! वर्तमानमें भले तू प्राप्त न कर सके, लेकिन उसका संस्कार, जैसे संस्कार डाल अंदर.. अक बात ऐसी है, अक समयकी पर्यायमें दूसरी पर्याय आती नहीं. वर्तमान पर्यायका संस्कार दूसरी पर्यायमें आता नहीं. इर भी यहां आता है, ऐसा लिया है. जिसका पुरुषार्थ ... नयी पर्यायमें पूर्वकी पर्यायका संस्कार आया नहीं. थोडी सूक्ष्म बात है. पूर्व पर्यायमें जो संस्कार था, वह नयी पर्यायमें नहीं आता. ऐसा प्रगट होता है उसमें. जैसा यह संस्कार है, वैसा नया संस्कार अपनी पर्यायमें प्रगट होता है. पूर्वकी पर्याय व्यय हो जाती है. संस्कार किसमें डाले? वह तो व्यय हो जाती है. आलाला..! कठिन बात है, भाई! वस्तुका स्वरूप सूक्ष्म है.

यहां कहते हैं, दृढ संस्कार डालेगा तो अन्य गतिमें प्रगट होगा. अक पर्याय दूसरी पर्यायमें तो जाती नहीं. और यह ईस गतिमेंसे दूसरी गतिमें प्राप्त करे, वह व्यवहारसे बात डी है. पर्यायमें संस्कार दृढ है तो दूसरी पर्यायमें भी दृढ संस्कार अपनेसे उत्पन्न होगा, ऐसा श्रव लिया है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- पर्याय तो .. होती है.

मुमुक्षु :- पर्याय नष्ट हो जाती है..

उत्तर :- दूसरी पर्यायमें उतने ही वजनवाला संस्कार उत्पन्न होगा. ऐसी पर्यायकी योज्यता है. सूक्ष्म बात है. पर्याय तो व्यय होगी. तो उत्पादमें वह तो आती नहीं. आलाला..! लेकिन जितना संस्कारका जोर था, उतने जोरवाली नयी पर्याय उत्पन्न हो चुकी है. जिसको अंदरमें लगी है, अंतरमें लगनी लगी है उसको तो दूसरी पर्यायमें वह संस्कार प्रगट लुअे बिना रहता नहीं. आलाला..! समझमें आया? नहीं तो अक पर्याय दूसरी पर्यायमें जाती नहीं. आलाला..! जातिस्मरण होता है. जातिस्मरणमें पूर्वकी पर्याय वर्तमानमें याद आती है. वह वर्तमानमें पुरुषार्थका काम है. पूर्वका कारण नहीं. वर्तमानमें पुरुषार्थ है वह उसमें आता है. उसका यह काम है. आलाला..!

‘ईसलिये सतके गहरे संस्कार डाल.’ अकदम तू प्राप्त नहीं करे तो उलजनमें मत आना. अंदरमें भगवान अकर्ता-अभोक्ता, सख्यिदानंद प्रभु अनाकूल आनंदका ढेर है, जैसे संस्कार डाल. आलाला..! वह ५०में आया. ५० के बाद दर.

शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे, चिंतन करे, मंथन करे उसे-भले कदाचित् सम्यग्दर्शन न हो तथापि-सम्यक्त्वसन्भुजता होती है. अंदर दृढ संस्कार जाते, उपयोग एक विषयमें न टिके तो अन्यमें भदते, उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे, उपयोगमें सूक्ष्मता करते-करते, चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते हुअे आगे भडे, वह शुव कमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.

६२.

६२. श्रवण करनेमें इर्क है. 'शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे,...' क्या कलना है? गूढ बात है, गूढ है. याले तो भगवानकी वाणी सुनने भिले, लेकिन उससे आत्माका ज्ञान लोता है, जैसा नहीं है. समजमें आया? भगवानकी वाणी तो पर है. उससे यहां ज्ञान लो जाय, जैसा है नहीं. ज्ञानमें और वाणीमें दोमें अभाव है. उससे नहीं लोता... ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण कर. सिई श्रवण नहीं. ज्ञायकके लक्ष्यसे. इर्क है. ज्ञायक स्वरूप.. प्रवचनसारमें कल, पहला अधिकार पूरा लोनेके बाद, दूसरे अधिकारमें (कल), शास्त्रका अभ्यास करो. आगमका अभ्यास करो, लेकिन स्वलक्ष्यसे. अपना लक्ष्य रभकर. ध्येय-ध्येय भगवान है. आलाला..! उसके ध्येय बिना जे लोता है, सब बिना अंके शून्य हैं. बलिन यहां वह बात कलती है.

'शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे...' उससे ज्ञान नहीं लोता. श्रवण करनेमें तो त्रिलोकनाथकी वाणी भी अनंत बार श्रवण की. 'ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे,...' आलाला..! श्रवण करनेमें भी अपने ज्ञायकके लक्ष्यसे. मात्र श्रवण करनेके लिये श्रवण नहीं. शब्दमें बडा इर्क है. बलिनका कलनेका आशय यह है कि ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण कर तो लोगा. उसके लक्ष्य बिना मात्र श्रवणसे कुछ लाभ नहीं लोगा. आलाला..! अपूर्व वाणी है. आलाला..! दुनिया बालरकी बातोंमें पडी है. अंतर भगवान आत्मा, उसके लक्ष्य बिना श्रवण करे, कोर्ष भी श्रद्धा करे, लेकिन र्स लक्ष्यके बिना कुछ लाभ लोगा नहीं. आलाला..! लक्ष्य तो भगवान आत्माका लोना यालिये. श्रवणमें, श्रद्धामें, रमणतामें, अरे..! पूरा दिन जाने-पीनेमें लगनी तो यहां लगनी यालिये. ध्रुव स्वरूप मेरा प्रभु, पूर्णानंदका नाथ मैं हूं, जैसी उसकी धून (लगनी यालिये).

धर्मीकी धून अपने ध्रुवमें लगती है. आलाला..! धर्मीकी धून धैर्यसे.. पंद्रह बोल लिये हैं. धैर्यसे धभाव. एक बार तेरह शब्द लिये थे. सब ध. धर्मीके लक्ष्यसे ध्येयको ध्यानमें लेकर धैर्यसे धभाव. वह साधककी दशा (है). साधककी धून धभाव.

और अंदरमें जानेका प्रयत्न र्तना कर कि प्राप्त ढेकर छूटकारा ढे. प्राप्त हुअे बिना रहे नहीं. आला..! शब्दोंमें ढैसा कलनेमें आये, उसका भाव है वह तो (अनुभवगोचर है). 'शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे...'

मुमुक्षु :- .. ध्रुवधामना ध्येयना ध्याननी धभती धृणी धगश अने धीरजथी धभाववी ते धर्मनो धारक धर्मी धन्य छे.

उत्तर :- सभ ध. अेक बार यह बनाया था. आलाला..! धर्मेके ध्येयके लक्ष्यसे पर्यायमें धुनी धभानी. लगन लगानी लगन. आलाला..! उनके पास निकला. कौन-सा हुआ?

'शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे,...' भाई! यह शब्द कला, उसका हेतु क्या है? श्रवण करना वह कोई चीज नहीं है. श्रवण तो अनंत बार हुआ और अनंत बार नौ पूर्वका ज्ञान भी हुआ. अनंत बार आरह अंगका ज्ञान हुआ. लेकिन ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण किया नहीं. आलाला..!

मुमुक्षु :- ..लगवानके समवसरणमें...

उत्तर :- अनंत बार गया. लगवानके समवसरणमें अनंत बार प्रभुकी आरती उतारी. हिराकी थावी, भणि रत्नका दीपक और कल्पवृक्षके डूल, हिराकी थावी, भणि रत्नका दीपक और कल्पवृक्षके डूल (लेकर) प्रभुकी आरती की. उसमें क्या हुआ? वह तो पर है. भक्तिका भाव है तो शुभराग है. उससे धर्म ढोता है या उसके कारणसे कुछ-कुछ संस्कार ढलेंगे ढैसा नहीं है. आलाला..! संस्कार कोई दूसरी चीज है. आलाला..!

यहां वह कलते हैं, 'शुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे, चिंतवन करे,...' लेकिन ज्ञायकके लक्ष्यसे, हां! अंदर 'भंथन करे उसे-भले कदाचित् सम्यज्दर्शन न ढे...' अंतरकी लगनी लगी ढे, अंतरमें ध्रुवको-ध्येयको ध्यानमें लेकर धैर्यसे काम लेता ढे. 'तथापि-सम्यङ्त्वसन्भुजता ढोती है.' कदाचित् र्स भवमें सम्यज्दर्शन न ढे, तो सम्यङ्त्वसन्भुजता ढोती है. समकितकी सन्भुजता. भोक्षमार्ग प्रकाशकमें है. सम्यङ् सन्भुजता. विभा है. आलाला..!

'अंदर दढ संस्कार ढाले,...' अपने स्वभावके सिवा सभ ओरकी चिंता छेडकर, सभ ओरका जुकाव छेडकर अपने चैतन्यमें जुकना, उसके संस्कार ढालना. 'उपयोग अेक विषयमें न टिके...' कदाचित् अंदरमें उपयोगमें ज्ञानमें लक्ष्यमें न ले तो श्रद्धामें लक्ष्यमें रभना, शांतिमें लक्ष्य बढलना, आनंदमें बढलना, उपयोगको अंदर रभना. लक्ष्यमें गुण कोई भी पलटो. उपयोगके लक्ष्यमें कोई भी गुण लक्ष्यमें ढो, लक्ष्य

भले पलटे, उपयोग तो वहां रहता है. आलाहा..! ऐसी बात है. 'अन्यमें बढे, उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे,...' आलाहा..! भगवान आत्माको पकडनेको सूक्ष्म (उपयोग करे). क्योंकि शुभभावको भी अति स्थूल कला. पुण्य अधिकारमें. पुण्य अधिकारमें शुभभाव चाहे जितने हो, पंच महाव्रतादिके, लेकिन वह अति स्थूल है. यहां उससे हटकर सूक्ष्म उपयोग करे. कठिन बात है. अंदरकी बात है. अति स्थूल विषय. शुभउपयोग तो अति स्थूल है. पुण्य-पाप अधिकारमें, समयसारमें है. यह सूक्ष्म. आलाहा..!

'उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे,...' उपयोग यानी आत्माकी ज्ञान पर्यायि. उस पर्यायिको अंदरमें पकडनेकी सूक्ष्मता करे. स्थूलतामें वह पकडमें नहीं आता. स्थूल उपयोगमें तो राग आता है. आलाहा..! सूक्ष्म उपयोग ऐसा करे कि 'उपयोगमें सूक्ष्मता करते करते,...' ज्ञानने-देखनेकी पर्यायिको सूक्ष्म करे. स्थूलपना छोडते-छोडते, सूक्ष्म करता है. आलाहा..! यह कार्य है. सम्यग्दर्शन प्राप्त करनेकी यह चीज है. बाकी सब बातें हैं.

मुमुक्षु :- उपयोग अेक विषयमें न टिके तो अन्यमें लगावे तो अन्यमें कहां लगावे?

उत्तर :- अन्यमें यानी दूसरे गुणमें. अेक ज्ञान लक्ष्यमें न रहे तो श्रद्धा पर लक्ष्य जाये. गुण बढे. अपनेमें गुण है तो गुण पर बढे. आलाहा..! परमें पलटे ऐसा नहीं. आलाहा..! सूक्ष्म बात है, भाई! बहिन तो बोले होंगे, उसे विज विया था. उसमें यह आया.

'उपयोगको सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे, उपयोगमें सूक्ष्मता करते करते, चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते हुअे...' आलाहा..! यह उपाय है. कोई पूछता है न? समकित कैसे प्राप्त होता है? रात्रिको पूछते थे. प्रश्न था. 'चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते हुअे आगे बढे,...' आलाहा..! सूक्ष्म उपयोग, जिससे आत्मा पकडमें आये, अैसे पकडकर अंदर गहराईमें जाना. पर्यायिको ध्रुवमें ले जाना. आलाहा..! सूक्ष्म बात है, भाई! जो पर्यायि बाह्य है, उसको अंतर ले जाना. आलाहा..! 'आगे बढे,...' अंदर सूक्ष्मता करके आगे बढे. आलाहा..! 'वह अुव कमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.' अैसा कम करे उसको सम्यग्दर्शन मिलता है.

मुमुक्षु :- यह करण परिणामकी बात है क्या?

उत्तर :- परिणामकी. कर्म नहीं.

मुमुक्षु :- सम्यक् सन्मुअके विषयमें करण परिणाम आते हैं न? वह?

उत्तर :- करण-करण नहीं, यहां तो शुद्धात्माके अभिमुअ. शुद्धात्माके अभिमुअ.

करण, देशना लब्धि आदि आयी है. संस्कृतमें पाठ जैसा आया है, जयसेनाचार्यमें कि शुद्धात्म अभिमुञ्ज. शब्द रभकर किर (कहा), शुद्धात्म अभिमुञ्ज. जैसा पाठ है. सब देखा है न. शुद्धात्म अभिमुञ्ज परिणाम करना. आलाहा..! समझमें आया? करण और कर्म उसमेंसे निकालते थे. कांतिवाल है न? कांति शिववाल. पोरबंदरवाले. उसमेंसे निकालते थे, देभो! शुभभावसे समकित होता है. करण, देशना लब्धि, क्षयोपशम लब्धि, विशुद्धि धर्मका कारण है, जैसा निकालते थे. पत्रमें डालते थे. इस बार १५वीं गाथा पढी. प्रभु! जैनशासन किसको कहे? सुना. जिनाशासन. अबद्धस्पृष्ट. भगवान कर्मसे, रागसे अबद्ध है अर्थात् मुक्त है. परका स्पर्श नहीं. अनन्य है. जो वल है वल है. और संयोगी यीज भाव विकारादिसे रहित है. और पर्यायमें अनेकता है उससे भी रहित है. आला..! उसको जो अंतरमें देभे, उसने जैनशासन देभा.

मुमुक्षु :- .. आत्माको देभे वल जैनशासनको देभे.

उत्तर :- जैनशासन देभे. विरोधी थे. बहुत सालसे विरोधी थे. पत्रमें विरोध करते थे. वल सुना तो कहा, महाराज! हमे सख्या द्विगंबर बनाया. हमे सख्या द्विगंबर बनाया, जूठे थे. कांतिवाल ईश्वर है. पत्र निकालते हैं. पढा बहुत है. षट्पंडागम आदि बहुत पढा है, बहुत वांचन. बडा पत्र निकालते हैं. विरोध करते थे. १५वीं गाथामें जैनशासनकी व्याख्या करते-करते (कहा), जैनशासन किसको कलना? जैनशासन कोई गुण-द्रव्य नहीं है, जैनशासन पर्याय है. तो जो द्रव्य है अंदर पूरानंदका नाथ, उसका स्पर्श करके वेदन करना वल जैनशासन है. उसमें करण इलाना और इस शुभभावसे धर्म-समकित होगा, जैसी बात कहीं नहीं है. बादमें बदल गया, बहुत सालसे विरोध था. शुभभावसे होता है, देभो, इसमें लिखा है. समकित प्राप्त करनेमें पांच कारण है. विशुद्धि आदि है. बापू! वल तो अेक निमित्तसे कथन है. बाकी उसका अंतिम शब्द संस्कृतमें (जैसा है), शुद्धात्म अभिमुञ्ज परिणाम. जैसा पाठ है. शुद्ध जो आत्मा, उसके सन्मुञ्ज परिणाम. परसे विमुञ्ज और स्वसे सन्मुञ्ज. इस अभिमुञ्ज परिणामसे समकित होता है. है न? आलाहा..! कोई कहे कि, करणलब्धि, देशनालब्धि आदि सब आता है न? क्षयोपशम, विशुद्धि आदि आता है, सब हो. लेकिन दृष्टि शुद्ध पर गये बिना.. आलाहा..! शुद्धका अनुभव नहीं होगा. बाकी क्रियाकांडका शुभराग वाज शुभराग करे, उससे समकित प्राप्त नहीं करेगा. आलाहा..!

उपयोगको सूक्ष्म करे 'आगे बढे, वल जव कुमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.' उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है. दर हुआ न? दर के बाद ७५.

जिन्होंने चैतन्यधामको पहिचान लिया है वे स्वप्नमें जैसे सो गये कि बाहर आना अच्छा ही नहीं लगता. जैसे अपने महलमें सुप्तसे रहनेवाले यक्षवर्ती राजको बाहर निकलना सुहाता ही नहीं, वैसे ही जो चैतन्यमहलमें विराज गये हैं उन्हें बाहर आना कठिन लगता है, भारद्वाज लगता है; आंजसे रेत उठवाने जैसा दुष्कर लगता है. जो स्वप्नमें ही आसक्त हुआ उसे बाहरकी आसक्ति टूट गई है. ७५.

७५. 'जिन्होंने चैतन्यधामको पहिचान लिया है...' आलाहा..! चैतन्यधाम. स्वयं ज्योति सुप्तधाम. स्वयं ज्योति है, चैतन्य जगलण ज्योति. अनादि स्वयं ज्योति और सुप्तधाम. सुप्तका स्थान वल है. सुप्तकी उत्पत्तिका स्थान-क्षेत्र आत्मा है. आलाहा..! आनंदकी उत्पत्तिका क्षेत्र (चैतन्यधाम है). जमीन दो प्रकारकी है. अक साधारण जमीन होती है. क्या कलते हैं? कुलथी, कुलथी होती है. वल जमीन साधारण होती है. और अक जमीनमें यावल उगतते हैं, वल जमीन बलुत अच्छी होती है. यावल. यावलकी जमीन पत्थर हो वलं नलीं होती. उस जमीनमें ईक होता है. देभा है न. हमारे वलं अक है. यावलका .. ली है और... क्या कलते हैं? कुलथी, कुलथी आती है न? कुलथी अनाज. वलं दोनों होते हैं. हमारे वलंसे पासमें है. क्षेत्रका ईक है. जैसे लगवानके क्षेत्रमें ईक है. उसके क्षेत्रमें तो आनंदकी पकता है. आलाहा..! उसके क्षेत्रमें दुःख और मिश्रता नलीं होती. आलाहा..! भाई! वल तो अंदरसे विश्वास आना चालिये न. आलाहा..! वल बाहरसे मिल ज्ञय ऐसा नलीं है. आला..! अपूर्व पुरुषार्थ है.

वलं वल कल है. कौन-सा है? ७५. 'जिन्होंने चैतन्यधामको पहिचान लिया है वे स्वप्नमें जैसे सो गये हैं...' आलाहा..! चैतन्यधामका समकितमें लान लुआ, वे स्वप्नमें जैसे सो गये हैं अर्थात् स्वप्नमें जैसे अकाकार हो गये हैं कि 'बाहर आना अच्छा ही नहीं लगता.' आलाहा..! अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव करनेके सिवा बाहर किसी ली विकल्पमें आना अच्छा लगता नलीं. आलाहा..! सूक्ष्म बात है. चैतन्यधामको पहिचान लिया है उसकी बात है. आलाहा..! कैसे प्राप्त हो, वल तो पहले आ गया. आला..!

'चैतन्यधामको पहिचान लिया है वे स्वप्नमें जैसे सो गये हैं...' आनंदमें लीन. बाह्य शुभाशुभ परिणति ली होती है, लेकिन अंतरमें लीन है. आलाहा..! अंतरमें ध्येय ध्रुवका ध्येय कली छूटता नलीं. ध्रुवकी दृष्टि कली छूटती नलीं. आलाहा..!

समझिती लडाईमें लो तो भी उसका ध्रुवका ध्येय वहांसे लटता नहीं. जैसी बात है अंदरकी. आला..! 'स्वप्नमें जैसे सो गये हैं कि बाहर आना अच्छा ही नहीं लगता.' अंतर आनंदस्वप्न भगवान, उसका अंदर भान हुआ, अनुभव हुआ तो बाहर निकलना अच्छा नहीं लगता. बाहर निकलना अच्छा नहीं लगता. आलाला..!

'जैसे अपने महलमें सुभसे रहनेवाले यक्षवर्ती राजको बाहर निकलना सुहाता ही नहीं, वैसे ही जो चैतन्यमहलमें विराज गये हैं...' आलाला..! चैतन्य असंख्य प्रदेशी महलमें अंदरमें विराजकर, उसका अनुभव करके उसमें रहते हैं. आलाला..! बाहरमें तो रागादिसे काम करते हैं. लेकिन अंदरमें दृष्टिका घाम वहां पडा है. 'बाहर आना कठिन लगता है, भारूप लगता है.' आलाला..! अतीन्द्रिय आनंदमेंसे निकलना भार लगता है. 'आंभसे रेत उठवाने जैसा दुष्कर लगता है.' आलाला..! आंभसे रेतको उठाना. जैसे धर्मीको चैतन्यघामकी दृष्टि लगी है, घामका अनुभव हुआ है, उसको बाहरकी चीज भोजन लगती है, भार लगता है. कैसा?

'जो स्वप्नमें ही आसक्त हुआ उसे बाहरकी आसक्ति टूट गई है.' स्वप्नमें जैसा लीन हुआ है, भले लडाई लो, काम विषयकी वासनामें लो, लेकिन अंदरकी दृष्टिमें धून लगी है वह लटती नहीं. ध्येयमें ध्रुवका परिणामन हुआ, वह परिणामन कभी लटता नहीं.

(श्रोता :- प्रमाश वचन गुरुदेव!)